औरत को मारो: इज़्ज़त बचाओ!

हमने पहले भी 'सबला' में औरत से जुड़ी खानदान की इज्ज़त का सवाल उठाया है। इज्ज़त के नाम पर घर की बहू-बेटियां जलाई और मारी जाती रही हैं। कभी उसे सती और जौहर के बड़े-बड़े नामों से पुकारा गया। कभी खुद भाइयों और पिताओं ने उनका गला काट डाला। इतिहास इन कहानियों से भरा पड़ा है। आज का समाज इन उदाहरणों से भरा पड़ा है। कोई माई का लाल इन हत्यारों पर उंगली नहीं उठाता, बल्कि उन्हें वीर सूरमा का दर्जा दिया जाता हैं। हंसी आती है जब आठ दस परिवार वाले, पंचायत वाले या गांववाले मिल कर एक लड़की या औरत का कत्ल कर देते हैं और अपने आपको बहादुर समझते हैं। वाह रे, भारत के सूरमा मर्द।

आज माई के लालों में तो दम नहीं है, लेकिन हम औरतें ज़रूर यह आवाज़ उठाएंगी। किसने समाज को यह हक़ दिया कि वह खानदान की इज्ज़त का बोझ औरतों पर डाल दे। किसने मर्दों को यह हक़ दिया कि वही फ़रियादी और वही जज बन कर फैसला दे दें और गर्दन कटे एक औरत की!

हत्या पे हत्या

फिर एक बार घर के बाप, चाचा ताऊओं ने मिल कर सतरह बरस की लड़की को गंडासे से काट दिया। हरियाणा के नया गांव में सैनी खानदान ने अपने घर की बेटी को इसलिए मार दिया कि वह एक अहीर लड़के से प्यार करती थी। सिर्फ ग़ैर-जात के लड़के से प्यार करना ही उसका दोष नहीं था। उसका सबसे बड़ा दोष था कि उसने परिवार के सामने तन कर कह दिया कि वह शादी करेगी तो सिर्फ़ उसी लड़के के साथ।

एक लड़की होकर अपना फ़ैसला खुद लेने की हिम्मत की!

एक लड़की होकर मर्दों के सामने डटने की हिम्मत की!

औरत की इस हिम्मत से मर्द डरता है। उसकी गद्दी डोलने लगती है। और तभी घर के सारे मर्द, बाप, भाई जो कल तक उसके लाडले थे आज खून के प्यासे बन जाते हैं। जिसे गोद खिलाया उसके टुकड़े करने में उनका हाथ नहीं कांपता?

कट्टरपंथी सोच

अपनी सत्ता को सर्वोपरि समझना। औरत को सिर्फ़ हुक्म की गुलाम मानना। इस तरह की सोच इन मर्दों के दिमाग में बहुत गहराई तक घुसी हुई है। बचपन से इन्हें अपने बड़प्पन की घुट्टी पिलाई जाती हैं। ये मान कर चलते हैं कि घर की औरतों को इनकी मर्जी के रास्ते पर चलाना इनका हक़ है। अगर कोई औरत न माने तो उसे सज़ा देना भी इनका हक़ है।

क्यों? क्या भगवान ने इन्हें चार हाथ या दो दिमाग़ दिए है?

किस तरह से ये औरत से ऊंचे और बेहतर हो गए?

लड़की के प्यार करने से या अपनी मर्ज़ी का मर्द चुनने से किसी इज्ज़त को आंच आती है, यह सब बकवास है। जब घर के मर्द चाहते हैं तो ससुर भी बहू की इज्ज़त लूटता है। खुद पति अपनी पत्नी को अपने दोस्त या भाई के साथ सोने को मजबूर करता है। खुद मर्द गली-गली मुंह काला करते हैं। तब किसी को कानों-कान खबर नहीं होती। कोई माथा नहीं ठनकता।

मर्द के हाथ की कठपुतली बनने से इंकार करना, खुद अपना फैसला लेना ही इस पितृसत्तात्मक समाज से बर्दाश्त नहीं होता।

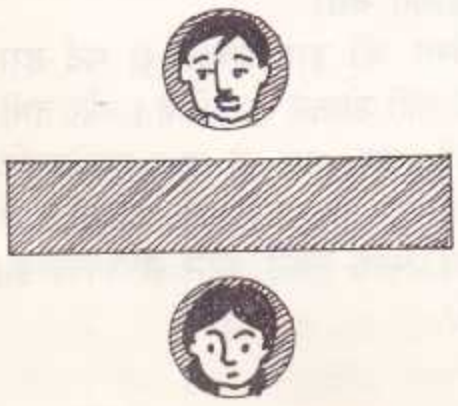

इस तरह की पारिवारिक हत्याओं को समाज भी बढ़ावा देता है। सबकी मिलीभगत यही है कि एक हत्या से दस और लड़कियां डर जाएंगी। ऊपर उठने की कोशिश करने वाले सिर फिर से झुक जाएंगे।

रोहतक ज़िले के एक पुलिस अधिकारी का कहना है कि पिछले साल दो भाइयों ने अपनी पत्नियां बदलनी चाहीं। जब एक औरत ने इंकार किया तो भाइयों ने मिल कर उसे मार डाला। एक औरत को इसलिए मार दिया कि उसने ससुर के साथ सोने से इंकार कर दिया। अब इस लड़की को इसलिए मार दिया कि उसने अपनी मर्ज़ी से मर्द चुना।

सोचिए, कौन सी इज्ज़त का सवाल है?

हां, अपने हक़ की इस लड़ाई मे कई औरतों की जानें जाएंगी क्योंकि वे अकेली हैं। मर्द सब एक तरफ़ हैं। मैं पूछती हूं उस खानदान की औरतों से, उस लड़की की मां, चाची, ताई से। क्यों चुपचाप बैठी देखती रहीं जब एक लड़की को मारने की योजना बन रही थी? वो सब तो एक साथ मिल गए। ताक़तवर बन गए। औरतें अलग-अलग बंटी हुई कमज़ोर हो गईं। अब रोती हैं घूंघट में मुंह डाले हुए, अपनी बेटी के लिए ही नहीं खुद अपने लिए भी।

उठो। एक हो जाओ, ताकत पाओ।

विरोध करो हर ऐसे अन्याय का।

तुममें हिम्मत है। तुम कमज़ोर नहीं।

सिर्फ़ पहचानो अपनी हिम्मत को। चाहे पन्द्रह साल की बच्ची हो या पचास साल की बूढ़ी। एक बार तो मिल कर खड़ी हो जाओ। देखें कितने सिर काटते हैं? □